भारत सरकार रांज. 31117/77 ❁ डाक पंजी. सं.- R.J./JPC/FN-024/2012-14

संस्थापक : स्व. श्री सुरेश पारीक

हरित क्रान्ति

कृषि विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त
कृषकों, पशुपालकों, सहकारिता का पाक्षिक पत्र

वर्ष - 35 अंक - 3 बुधवार, 10 अगस्त, 2012 सम्पर्क - 9829121191
E-mail : haritkranti.ag@rediffmail.com/gmail.com
वार्षिक शुल्क : 125/- रु. (सह डाक शुल्क) एक प्रति : 5/- रु.

देश की विभिन्न जलवायुवीय परिस्थितियों के लिए सरसों की पांच नई उन्नत किस्में विकसित

बदलते परिवेश में अधिक उत्पादन के लिए किसानों को जागरूक करने की आवश्यकता

भरतपुर। सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर ने अखिल भारतीय राई-सरसों परियोजना के अंतर्गत देश में कार्यरत विभिन्न केन्द्रों द्वारा विकसित सरसों (लाटा) की चार एवं एक बीज कम्पनी की संकर किस्म को अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान राई-सरसों परियोजना की 3-5 अगस्त में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय कांके रांची ने आयोजित तीन दिवसीय 19वीं वार्षिक संगोष्ठी में देश की विभिन्न जलवायुवीय परिस्थितियों के लिए अनुशंसित किया गया है। उत्तरी राजस्थान हरियाणा, पंजाब एवं जम्मू में समय से बुवाई हेतु आर.एच. 0749 व दिव्या 33, बारानी क्षेत्रों हेतु पी.बी.आर. 378 तथा देरी से बुवाई हेतु जे.एम.डब्ल्यू.आर.-08-3 को संगोष्ठी में अनुशंसा के लिए चिन्हित किया गया। इसके अतिरिक्त आसाम, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उड़ीसा एवं मणिपुर के बारानी क्षेत्रों के लिए संकर 44 एस01 को चिन्हित किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. स्वपन कुमार दत्ता इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि थे एवं बिरसा कृषि विश्वविद्यालय कांके, रांची के कुलपति डॉ. एम.पी. पांडेय ने समारोह की अध्यक्षता की। उद्घाटन संबोधन डॉ. एस.के. दत्ता ने कहा कि फसल सुधार, सही प्रबंधन, सिंचाई सुविधाओं एवं अच्छे समर्थन मूल्यों से ही देश में तिलहन उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिक गुणवत्तायुक्त संकर किस्मों को विकसित करें। पोषण की गुणवत्ता को बढ़ावा दें। साथ ही किसानों के पुराने विचार को बदलें और बदलते परिवेश में अधिक उत्पादन के लिए उन्हें जागरूक व प्रोत्साहित करने की जरूरत है। आर्थिक सुदृढ़ता के लिए किसानों को राई-सरसों की खेती को बढ़ावा देने की जरूरत है। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उप महानिदेशक (कृषि विस्तार) डॉ. के.डी. कोकाटे ने कहा कि विभिन्न परिस्थितियों के लिए अलग-अलग तकनीकों का विकास करना चाहिये एवं भारत में फैले हुए कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहायता से नवीन अनुसंधानों को किसानों तक पहुंचाया जा सकता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (बीज) डॉ. जे.एस. संधु ने कहा कि पूरे भारत में आज भी 54 प्रतिशत से अधिक पुराने बीज का उपयोग किसान कर रहे हैं। इससे उत्पादन क्षमता घटती जा रही है। इसलिए बीज गुणवत्ता में बदलाव लाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार बीज की खपत एक साल पूर्व बताये, ताकि जरूरत पूरी की जा सके। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एम.पी. पांडेय ने कहा कि भारत में तोरिया, राई एवं सरसों का उत्पादन घटता-बढ़ता रहता है।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. जे.एस. चौहान ने तोरिया, राई एवं सरसों फसल की अखिल भारतीय परियोजना की 2011-12 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. चौहान ने कहा कि नई किस्मों के प्रति किसानों में जागरूकता की कमी एवं रबी में सिंचाई के साधनों का अभाव तिलहन उत्पादन कम होने का कारण है। उन्होंने बताया कि 18 राज्यों में फैले हुए 23 केन्द्रों द्वारा तोरिया, पीली सरसों, गोभी सरसों, भारतीय राई, करन राई एवं तारामीरा की किस्मों के विकास का कार्य किया जा रहा है। इस वर्ष 53 उन्नत किस्मों के 132.83 क्विंटल प्रजनक बीज का उत्पादन किया गया। जिसके परिणामस्वरूप उन्नत किस्मों का व्यापक प्रसार हो सकेगा एवं देश को खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर बनाने में अग्रता मिल सकेगी। डॉ. चौहान ने संगोष्ठी में जानकारी दी कि गत वर्ष देशभर में 24 केन्द्रों द्वारा 16 राज्यों के 68 जिलों में 588 प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। बैठक में विभिन्न राज्यों के लिए वहां की जलवायु भूमि, संसाधन आदि स्थितियों को ध्यान में रखते हुए राई-सरसों के उत्पादन बढ़ाने की कार्य योजना तैयार करने का निर्णय लिया गया। इस संगोष्ठी में प्रजनक बीज उत्पादन तकनीक हस्तांतरण अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं किस्मों को चिन्हित किये जाने के साथ मुख्य शोध बिन्दुओं का कनवार चर्चा हुई इसमें राई-सरसों बीमारियों, बीमारी की रोकथाम राई ने संकर किस्मों का उत्पादन गुणवत्ता सुधार परम्परागत तकनीक सुधार आदि पर गहन विचार विमर्श किया।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के चार प्रकाशनों 'भारत में राई सरसों के प्रमुख खरपतवार' 'राई-सरसों की अधिसूचित किस्में तथा प्रजनक बीज उत्पादन का विवरण 2006-12' 'वार्षिक प्रतिवेदन 2011-12' एवं एक सोविनयर का भी अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

सरसों अनुसंधान निदेशालय से निदेशक डॉ. जे.एस. चौहान के अलावा डॉ. वाई.पी.सिंह, डॉ. बी.के. काण्डपाल, डॉ. पी.के. राय, डॉ. वी.वी. सिंह, डॉ. के.एच. सिंह, डॉ. महाराज सिंह, डॉ. पंकज शर्मा, डॉ. एस.एस. राठौड़, डॉ. अशोक शर्मा, डॉ. विनोद कुमार, डॉ. नन्जूनन्दन, डॉ. आर.सी. सचान, करनल सिंह एवं श्री लालाराम तथा अन्य प्रदेशों से आये लगभग 120 अनुसंधान एवं प्रसार कार्यकर्ताओं ने इस संगोष्ठी में भाग लिया।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी एवं
स्वतंत्रता दिवस की सभी किसान भाईयों
को हार्दिक शुभकामनाएं

कल्पतरु एक्सप्रेस

Text View Image View Comments Email Print SHARE

अलग-अलग प्रदेश की जलवायु के हिसाब नए बीजों की अनुशंसा

सरसों अनुसंधान ने पांच नई किस्में जारी कीं

- सरसों की पांच नई उन्नत किस्में विकसित
- 19 वीं राष्ट्रीय संगोष्ठी मे इन किस्मों की घोषणा
- अगले साल से नई किस्मों के मिलेंगे बीज

भरतपुर। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर के नेतृत्व में अखिल भारतीय राई-सरसों परियोजना के अर्न्तगत देश की सरसों (लाहा) की चार नवीन किस्मों को रिलीज किया गया। रांची में 19 वीं राष्ट्रीय संगोष्ठी में इन किस्मों की घोषणा की गई। अगले साल से किसानों को इन किस्मों का पर्याप्त बीज मिल सकेगा।

उत्तरी राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, एवं जम्मू में समय से बुवाई हेतु आरएच 0749 व दिव्या 33, बारानी क्षेत्रों हेतु पीबीआर 378 तथा देरी से बुवाई हेतु जेएम डब्लू आर-08-3 को संगोष्ठी में अनुशंसा के लिए चिन्हत किया गया । इसके अतिरिक्त असम, बिहार, छत्तीसगढ, झारखण्ड, उड़ीसा एवं मणिपुर के बारानी क्षेत्रों के लिये संकर 44 एस 01 को चिन्हित किया गया है। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. जेएस चौहान ने तोरिया, राई एवं सरसों फसल के अखिल भारतीय परियोजना की 2011-12 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की । डॉ.चौहान ने कहा कि नई किस्मों के प्रति किसानों में जागरूकता की कमी एवं रबी मे सिंचाई के साधनों का अभाव तिलहन उत्पादन कम होने का कारण है। उन्होंने बताया कि 18 राज्यों में फैले हुए 23 केन्द्रों द्वारा तोरिया, पीली सरसों, गोभी सरसों, भारतीय राई, करन राई एवं तारामीरा की किस्मों के विकास का कार्य किया जा रहा है। इस वर्ष 53 उन्नत किस्मों के 132. 83 क्विंटल प्रजनक बीज का उत्पादन किया गया । इसके परिणामस्वरूप उन्नत किस्मों का व्यापक प्रसार हो सकेगा एवं देश को खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर बनाया जा सकेगा। डॉ. चौहान ने संगोष्ठी में जानकारी दी कि गत वर्ष देशभर में 24 केन्द्रों द्वारा 16 राज्यों के 68 जिलों में 568 प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। बैठक में विभिन्न राज्यों के लिए वहां की जलवायु, भूमि, संसाधन आदि स्थितियों को ध्यान में रखते हुऐ राई-सरसों के उत्पादन को बढ़ाने की कार्ययोजना तैयार करने का निर्णय लिया गया। इस संगोष्ठी में प्रजनक बीज उत्पादन, तकनीकि हस्तांतरण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं किस्मों को चिन्हित किये जाने के साथ मुख्य शोध बिन्दुओं का क्रमवार चर्चा हुई। राई-सरसों बीमारियों, बीमारी की रोकथाम, राई में संकर किस्मों का उत्पादन, गुणवत्ता सुधार, परम्परागत तकनीकि सुधार, आदि पर गहन विचार विमर्श हुआ। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के चार प्रकाशनों भारत में राई सरसों के प्रमुख खरपतवार, इसकी अधिसूचित किस्मों तथा प्रजनक बीज उत्पादन का विवरण (2006-12), वार्षिक प्रतिवेदन एवं एक सोविनियर का भी अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

रांची में आयोजित कांफ्रेस में सरसों की नई किस्मों के विकास को आयोजित संगोष्ठी में मंचस्थ आईसीएआर के अधिकारीगण।